Impact Factor 2.147

ISSN 2349-638x

Refereed And Indexed Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-III ISSUE-X Oct. 2016

Address
•Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
•Tq. Latur, Dis. Latur 413512
•(+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
•aiirjpramod@gmail.com

Website
•www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

विवेकानंदजी की विचारधारा का हिंदी कविता पर प्रभाव

- डॉ. लीला कर्वा
लातूर.

11 सितम्बर 1893 यह दिन विश्व बंधुत्व दिवस के रुप में मनाया जाता है। इस दिन भारत का एक योध्दा सन्यासीने भारतीय संस्कृति और विचारधारा के अनुरुप वैश्विक धर्म सभा में विश्व बंधुत्व का आवाहन किया । उनके भाईयों और बहनों के संबोधन से मानो सबमें वैश्विक बंधुत्व की चेतना भर दी ।

ऐसे वीर योध्दा सन्यासी स्वामी विवेकानंद के विचारधारा से संपूर्ण विश्व प्रेरित था । विश्व इतिहास में एक नई आध्यात्मिक क्रांती का उदय हुआ। विवेकानंद के दार्शनिक विचारों का महत्व इसलिए अधिक है, उन्होंने अद्वेत वेदान्त को सरल वैज्ञानिक व्यवहारिक और प्रेरणादायक बनाने का प्रयत्न किया। अद्वेत समझाते हुए विवेकानंद कहते हैं - सब कुछ एक है, कोई विभेद नहीं है। और इसी अद्येत तत्व के आधार पर विश्व बंधुत्व की बात वो कहते हैं । हम सभी उस परमात्मा की संतान हैं । यह विश्व हमारा परिवार है - **वसुधैव कुटुम्बकम** विचार जगत के सन्मुख रखा ।इन विचारों को हम ज्ञानेश्वर महाराज के काव्य में देखते हैं ।

हे विश्वचि माझे घर । ऐसी मति जयाची स्थिर
किंबहुना चराचर आपणाचि जाहला

विवेकानंद के इन विचारों का प्रभाव हिंदी साहित्य में देखने को मिलता है। भारतेन्दु कृष्ण भक्त होते हुए भी उन्होंने अन्य भक्ति सम्प्रदायों और धर्मों का कभी विरोध नहीं किया ।

नाहिं ईश्वरता अटकी वेद में
तुम तो अगम अनादि अगोचर सो कैसे मतभेद में ।

विवेकानंद ने शिकागों के भाषण में परमात्मा का रहस्य बताते हुए कहा ....

आकाशात पतिं तोय, यथा गच्छति सागरम
सर्वदेव नमस्कार: केशव प्रति गच्छति ।

श्रद्धा के साथ चाहें जिस मार्ग से उपासना करें, वे सभी एक ही परमात्मा के पास ले जाती हैं ।भारतेन्दु ने इसी धार्मिक ऐक्य की प्राण प्रतिष्ठा की है -

खंडन जग में काको कीजै
सब मत तो अपने ही है, इनको कहा उत्तर दीजै ।

पंत की युगवाणी में व्यक्ति को जाति वर्ण संस्कृति और अपने सीमित समाजों की संकीर्णता से बाहर निकाल लाना चाहते हैं। जब तक मनुष्य मनुष्य के बीच में किसी भी प्रकार का भेदभाव बना रहेगा । मानव जीवन सुखी नहीं हो सकता ।

जग के सब भेदभाव हो लय
जीवन की बाधाएँ हो क्षय
जग हो मानव की जय

प्रसादजी ने कामायनी में जन-मंगल के लिए, अद्वैतवादी भावना को स्वीकार किया ।

सब भेदभाव भुलवा कर
दुख सुख को दृश्य बनाता
मानव कह रे । यह मैं हूँ

यह विश्व नीड़ बन जाता

इस भेदभाव को भुलना सभी को बंधुत्व के रुप में मानना इसके लिए *प्रेम* महान तत्व के बीज का रोपण हर मानव के

हदय में करना होगा ।

जगत के प्रेरक शक्ति प्रेम ही है ।

स्वामी विवेकानंद एक स्थान पर ईश्वर को इन क्रान्तिदर्शी विचारों के साथ प्रस्तुत किया ।

मैं उस धर्म और ईश्वर में विश्वास नहीं करता जो विधवाओं के आँसू पोंछने या अनाथों को रोटी देने में असमर्थ है ।

हे युवक दुखियों के दुःख का अनुभव करो

उनकी सहायता करने लिए आगे बढ़ो ।

ईश्वर ढूँढने कहाँ जा रहे हैं । गरीब दुःखी निर्बल की सेवा ही ईश्वर की पूजा है ।

स्वामीजी सभी धार्मिक आचार्यों में असाधारण दिखते हैं । क्योंकि योग और वेदान्त का उपदेश इन्होंने भारत में आकर नहीं किया, वरन् भारतमाता की सेवा का आग्रह किया।उन्होंने कहा पचास वर्षो तक इस देश के युवक अन्य देवी देवताओं को त्याग करें और भारत माता को ही अपनी आराध्य देवता बनाएँ यह मेरी इच्छा है ।

भारत माता की सेवा ही अध्यात्म है । व्यक्तिगत मुक्ति के आग्रह का त्याग कर भारत की सेवा में ही अपना जीवन सार्थक बनाए ।विवेकानंद के इन विचारों को भारतेन्दु काल से प्रगतिवादी काल के कवि में देख सकते हैं ।

प्रेम की महत्ती को स्पष्ट करते हुए भारतेन्दु कहते हैं ईश्वर को केवल प्रेमलोक में ही प्राप्त किया जा सकता है ।

नहीं मंदिर मैं, नहिं पूजा में, नहिं घटा की घोर मैं

हरीचन्द वह बांध्यो डोलन एक प्रीति के डोर मैं.

शुध्द सात्विक प्रेम से आत्मा का एकीकरण होता है । तभी वैश्विक बंधुत्व का साकार रुप हम प्राप्त कर सकते हैं । गोपाल शरणसिंह के शब्दों में प्रेम जग जीवन का सार है । ऐसे उदात्तम प्रेम के लिए सर्वस्व का त्याग की बात वो कहते हैं

हे जग जीवन सार

आओ प्रेम बनो तुम मेरे

हदय हार सुकुमार

प्रसाद जीने प्रेम मानवतावादी प्रवृथ्ति का मूल तत्व माना है । प्रसादजी के शब्दों में प्रेम का आदर्श इस प्रकार व्यक्त हुआ है ।

प्रेम यज्ञ में स्वार्थ और कामना का हवन करना होगा तब तुम, प्रियतम स्वर्ग बिहारी होने का फल पाओगे ।

प्रेम पवित्र पदार्थ न इसमे कही कपट की छाया हो

इसका परिमित रुप वही जो व्यक्ति मात्र में बना रहे ।

क्योंकि यही प्रभु स्वरुप है जहाँ की सबको समता रहे ।

प्रेम का उदात्त रुप और विवेकानंद का तरुणों को श्रम का आवाहन के साथ भारत के विकास से ही दीन दुःखीयों के कष्ट हरने की बात अनेक कवियों के काव्य का विषय बनी है । पंतजी ने ग्राम्या में ग्राम जीवन की करुण कहानी कुछ इस तरह अभिव्यक्त की है ।

यहाँ खर्व नर (बानर) रहते युग युग से अभिशापित

अन्न वस्त्र पीडित असभ्य, निर्बुध्दि पंक मे पालित

यह तो मानव लोक नही रे, यह है नरक अपरिचित

यह भारत का ग्राम सभ्यता संस्कृति से निर्वासित

मैथिलीशरण गुप्त ने भी भारत भारती में भारत में अनेक संदर्भों में व्याप्त विषमता को प्रस्तुत किया है ।

भारत तुम्हारा कैसा भयंकर वेश है ।
हे और सब निःसेष केवल नाम ही अब शेष है ।

भारत के उज्वल अतीत को पाने के लिए वो सभी को प्रेरणा देते हैं।

आओ प्रियवर ज्ञान दान का पुण्य कमाओ
राष्ट्र यज्ञ के लिए प्रेम से हाथ बढ़ाओ
नीचे गिरने न दो, देश को उच्च उठाओ
हदय देश में सरस प्रेम के स्त्रोत बहाओ

शिवमंगल सुमन ने न केवल देश की अपितु विश्व मंगल की कामना करते हुए वे कहते हैं -

विश्व में आनंद बरसे
थी यही शुचि चाह तेरी
दीन दुखियों के हदय की
वेदना का धन समेंटे

रामविलास शर्मा देश जागृति के दुष्कर कार्य के लिए समस्त देशवासियों का आहवान करते हैं -

आओ यह पहाड़ सा भार उठाओ
दुर्भिक्ष महामारी से दुष्ट लुटेरों से
आओ यह अपना प्यारा देश बचाओ
ऐ नौजवान भारत के
गर्भ लहु की आज चुनौती है, सब मिलकर भार उठाओ

स्वामी विवेकानंद ने जहाँ युरोप और अमेरिका में भारतीय वेदान्त की महत्ती बतायी । वहीं वे उनकी भौतिक उन्नती देखकर प्रभावित हुए । अच्छे जीवन के लिए कठोर परिश्रम, व्यावहारिक मूल्यों साहसिकता कुछ अंश में उपयोगी मानी । उन्होनें कहा था - विज्ञान और धर्म का मिलन होगा । काव्य और दर्शन में बंधुत्व स्थापित होगा ।

इसी भाव से ईश्वर के प्रति आस्था और देश की स्वाधिनता के लिए कवि नवीन ज्योतिर्मय से प्रार्थना करते हैं ।

वर दो : इस स्वाधीन देश के हम आबाल वृध्द नर नारी
तब विश्व भर रुप निहारें करे नित्य उसका आराधन
हे ज्योतिर्मय विश्व नाश का तिमिर हरो,
चमके बस धांगन ।

संदर्भ :

1.आधुनिक हिन्दी साहित्य की मानवतावादी भुमिका - डॉ. देवेश ठाकुर
2.विश्व बंधुत्व - स्वामी गोविंद गिरी